प्रातः सभा 4/8/68 ओमशान्ति "पिताश्री शिवबाबा याद है?"

ओमशान्तिः शिव भगवानुवाचः बच्चों को समझाया है ऊँच ते ऊँच है भगवान। उनका नाम है शिव। बाप ही बच्चों को बैठ समझाते हैं। सिवाय बच्चों के बाप को तो कोई जान न सके। बच्चों को यह भी समझाना है बरोबर अभी है पुरुषोत्तम संगमयुग। जैसे बाप घड़ी2 कहते हैं अपन को आत्मा समझो। अपन को आत्मा समझो। यह तपस्या करो। वैसे यह भी निश्चय रखो कि हम संगमयुगी हैं। यह संगमयुग है। कलियुग नहीं है। संगमयुग के बाद सतयुग आता है। बाप कहते हैं मैं भी आता हूँ संगम पर। जब कि दुनिया चेंज करनी होती है। नई दुनिया स्थापना कर..... पहले अक्षर स्थापना कहना है। स्थापना के पहले विनाश नहीं कहना है। अक्षर हमेशा करेक्ट बतानी चाहिए। बाप ने समझाया है तीन मतें हैं। मनुष्य मत, ईश्वरीय और दैवी मत। मनुष्य मत को मानव मत भी कहते हैं। कोई अपनी नई संस्था स्थापन करते हैं तो कहेंगे मानव मत की स्थापना की है। उन्हों को यह पता नहीं है कि मानव और मनुष्य मत एक ही है। मानव मत की भी संस्था है। तो अभी स्थापन हुई है। मनुष्य तो सभी मनुष्य ही हैं। मनुष्य मत को कहा जाता है आसुरी मत; क्योंकि रावण राज्य है। सारी सृष्टि में रावण राज्य है। रावण मत को ही कहा जाता है भ्रष्ट मत; क्योंकि मनुष्य भ्रष्टाचार विकार से पैदा होते हैं। वहाँ है दैवी मत। निर्विकारी। उनको श्रेष्ठ मत कहेंगे। इनको भ्रष्ट कहेंगे। यह अक्षर अच्छी रीत याद करनी है। बाप बैठ तुम बच्चों को समझाते हैं। यह है ईश्वरीय मत। रुद्र ज्ञान–यज्ञ है तो रुद्र मत भी कह सकते हैं। अथवा शिवमत कहो। हे भगवानुवाचः तो भगवान को जानना चाहिए ना। बाप आत्माओं को अपना परिचय देते हैं; क्योंकि भगवान जानते हैं कि मुझे कई मनुष्य जानते नहीं हैं। तुम ईश्वरीय सम्प्रदाय हो। तो जरूर बाप को जानते होंगे। तुम्हारी दैवीमत बन रही है। दोनों से बड़ी कौन सी? यह तो समझते हो सतयुग में होगी देवता मत। यहाँ कलियुग में है मानव मत। अभी मानवमत को देवता मत किसने बनाया? बाप ने। जिसको ही भगवान कहा जाता है। ..... शिवबाबा की है श्रेष्ठमत। देवताओं की है श्रेष्ट मत। फिर मनुष्यों की है भ्रष्ट मत; क्योंकि विकारी मत है। वह श्रेष्ठाचारी निर्विकारी मत है। निर्विकारी श्रेष्ठ मत किसने दी? बाप ईश्वर ने दी। तो तुम मत पर भी समझा सकते हो। यहाँ सभी मनुष्य ही मनुष्य हैं। देवता कोई है नहीं। कलियुग में होते ही हैं मनुष्य। मनुष्यों की मत है आसुरी। लड़ना झगड़ना उनको आसुरी मत कहा जाता है। ईश्वरीय मत को कोई जानते ही नहीं। बाप को भूलने से आसुरी मत हो जाती है। जब तक फाइनल दैवीमत हो जाये तब तक –– मिक्सचर हैं। अपन से पूछना चाहिए हमारे में कोई आसुरी गुण तो नहीं हैं। लड़ते झगड़ते तो नहीं हैं। मेरे में क्रोध का भूत तो नहीं है। अगर क्रोध है तो वह मनुष्य आसुरी मत हो गई। ईश्वरीयमत नहीं ठहरे। फिर दैवी मत जल्दी बन न सके; क्योंकि उस समय भूत की प्रवेशता हो जाती है। देह अभिमान है नम्बरवन भूत। देहअभिमान होने से ही काम क्रोध..... आदि भूत प्रवेश करते हैं। यह है ही भूतों की दुनिया। आसुरी दुनिया है ना। सभी में 5 भूतों की प्रवेशता है। किसी मनुष्य की पूजा करना गोया 5 भूतों की पूजा करना है। गुरुओं की भी पूजा करते हैं। यह है भूत पूजा। वहाँ यह भूत पूजा होती ही नहीं। तुम ब्राह्मणकुल वंशी ही फिर देवताजन्म में आते हो। तुम्हारा यह ब्राह्मण कुल है सर्वोत्तम कुल। जबकि तुमको नॉलेज मिलती है। अभी तुम समझते हो देवताओं में दैवीगुण होते हैं। अगर तुम यहाँ दैवी गुण न धारण करेंगे तो फिर सजा खाकर देवता बनेंगे। फिर भी ऊँच पद नहीं पा सकेंगे। इसलिए गायन है कोटों में कोऊ। आसुरी गुण होंगे, क्रोध होगा, देह–अभिमान होगा तो ऊँच पद नहीं पावेंगे। देवताओं में यह भूत होते ही नहीं। कोई क्रोध करते हैं समझो इनमें भूत की प्रवेशता है। यह भूत सभी मनुष्यों में है। अपन को देखना है हम लड़ते–झगड़ते तो नहीं हैं। अथवा मनुष्यों मिसल चलन तो नहीं चलते हैं; क्योंकि अभी तुम बच्चों को दैवी चलन वाला बनना है। अगर गन्दगी निकलती है तो समझो (भूत) है। भूतों से झट किनारा कर देना चाहिए। हियर ना ईविल। सी नो ईविल। देह–अभिमान के कारण ही फिर ईविल, छी छी गन्दगी की बातें आती हैं। वह फिर बहुत सजा खाते हैं। समझो कोई प्रजीडेन्ट का बच्चा है कुछ ऐसा गंदा

काम कर मजीस्ट्रेट के आगे जावेंगे तो कितनी इज्जत जावेगी। माँ–बाप भी शर्मावेंगे यह क्या। विलायत तरफ भी बड़े2 आदमी छी छी काम तरफ जाते हैं तो नाम–बदनाम हो जाता है। तुम्हारा भी नाम बहुत बदनाम होता है। अगर ईश्वर की बनकर फिर भूत की प्रवेशता होती है तो। कहते भी हैं बाबा आप आवेंगे तो हम आप के ही होकर रहेंगे। आप से ही वरसा लेंगे। बाप तो स्वर्ग की स्थापना करते हैं। वहाँ देहधारी की याद नहीं रहती। अभी तुम हो संगमयुग पर। तो अभी ही बुरे–2 संकल्प आते हैं। कामी मनुष्य को सारा दिन विकार का ही संकल्प आवेगा। रात अथवा दिन को भी गटर में ही गिरे रहेंगे। वही ख्यालात रहेगी। बाप बैठ समझाते हैं माया बड़ी तीखी है। सबसे नम्बरवन है काम का संकल्प। बहुतों को आता है इस कारण ही झगड़ा चलता है। अखबार वाले भी इन बातों को क्या जाने; क्योंकि उनकी तो मनुष्य मत है ना। ज्ञान का तो उनको पता ही नहीं। कहते हैं यह भाई बहन बनाते हैं। अरे यह तो अच्छा है ना। क्रिमनल एसाल्ट न करेंगे। ब्रह्माकुमारी दोनों बहन भाई हो गये। उनको फिर विकार में जाना तो इनसल्ट है। कई ब्राह्मणियाँ कुमारियाँ जो सेन्टर पर रहती हैं वह भी कब सपाटे में आ जाती हैं। माया ऐसा ठूंसा जोर से लगाती है जो एकदम गिर पड़ते हैं। फिर बाप भी क्या करे। लौकिक बाप भी देखते हैं हमारा बच्चा गंदा बन पड़ा है तो अन्दर ही घूटका खाते रहेंगे। यह भी ऐसे हैं। इस दादा को घूटका खाना पड़ता है। यह तो नाम बदनाम कर देंगे। बाप कहते हैं बच्चे बाकसिंग है। खबरदार न रहने से माया एकदम ठूंसा मार फां कर देगी। महा(न) से मलेच्छ बन जाते हैं। तो वह है मानव मत। भ्रष्टाचारी मत। हरामज़ादे मत। नानक ने भी कहा है ना असंख्य चोर..... यह कोई नानक के सोल ने नहीं कहा है। यह तो जिसने ग्रन्थ बनाया उन्होंने कहा है; क्योंकि नानक की तो आत्मा आई और आकर सिक्ख धर्म की स्थापना की। उस समय तो सिक्ख धर्म वाला कोई नहीं था। तो किसको कहेंगे असंख्य चोर..... क्राइस्ट जब आवेगा क्रिश्चन धर्म स्थापन करने। क्राइस्ट तो होगा नहीं। फिर उस समय बाइबल किसलिए बनावेंगे। किसके पढ़ने लिए बनावेंगे। ..... ही नहीं होते हैं। गुरुनानक भी आया तो उस समय वह धर्म था नहीं तो ग्रन्थ किसके लिए बनावेगा। उसने तो आकर धर्म की स्थापना किया। फिर जब वह सिक्ख धर्म वृद्धि को पाया तब बाद में शास्त्र आदि बनते हैं। उस समय थोड़े ही लिखा है। यह सभी बाद में बनते हैं। बाइबल भी बाद में बना है। जो जो धर्म स्थापन करने आते हैं पहले तो अकेले ही आते हैं। पीछे वृद्धि को पाते हैं। जब लाखों करोड़ों हो जाते हैं तब ही राजाई स्थापन होते हैं। अभी एक बाप आया स्वर्ग की स्थापना कर रहे हैं। एक को ही एडाप्ट किया। फिर ब्राह्मण पैदा होते रहे। अभी तो होशियार होते बाहर निकलते रहते हैं। शुरु में इतने होशियार नहीं थे। समझते थे कुछ ताकत है जो काम कर रहे हैं। गालियाँ इनको देते थे। क्राइस्ट के शरीर पर मार पड़ी। खुद तो पवित्र आत्मा आती है, उसने थोड़े ही कुछ किया जो सज़ा मिली। पाप तो कुछ भी किया नहीं। उनको पहले सुख फिर दुख होता है। पवित्र आत्मा को पहले दुख कैसे मिल सकता। तुम बच्चे जानते हो उनकी आत्मा अभी बैगर है। इस समय सभी तमोप्रधान हैं। तो एक है मानव मत यानी कि आसुरी मत; क्योंकि सभी रावण सम्प्रदाय हैं। देवतओं की भ्रष्ट मत नहीं होती। मनुष्यमत यानी भ्रष्ट मत; क्योंकि मनुष्य में ही 5 विकार हैं। देवताओं में 5 विकार होते ही नहीं। यह बाप ही आकर समझाते हैं। पहले2 तो इन देवताओं का राज्य था। उन्हों को यह दैवी मत किसने दी। 84 जन्म तो देवताएँ ही शुरू करेंगे ना। दैवी गुणों से फिर आसुरी गुणों वाले बन जाते हैं। आपे ही पूज्य..... भगवान के लिए यह नहीं कहेंगे। वह तो एवर पूज्य है। कहते हैं मैं कब पुजारी नहीं बनता हूँ। वास्तव में एवर पूज्य भी नहीं हूँ; क्योंकि सतयुग में तो मुझे कोई पूजते ही नहीं। जानते ही नहीं। इसलिए मैं एवर पूज्य भी नहीं हूँ। वहाँ मुझे जानते ही नहीं। इसलिए मैं एवर पूज्य भी नहीं हूँ। अभी तुम मुझे जानते हो। देवताओं से कब पूछा है क्या जो वह कहे नेती2 हम नहीं जानते हैं। ऋषियों–मुनियों से पूछा। तो वह कहते थे नेती2, हम नहीं जानते। तो गोया नास्तिक ठहरे। देवताओं से थोड़े ही पूछा। तो यह सभी बातें बाप बैठ समझाते हैं। मानव मत में है देह अभिमान। .....

5 विकार। यह 5 भूत ऐसे हैं जो छोड़ते ही नहीं। लड़ाई झगड़े ऐसे करते हैं। बाप कहते हैं कोई में भी भूत हो तो उनको देखो भी नहीं। हियर नो ईविल। तुम देखते क्यों हो? भूतवाले के सामने खड़े रहेंगे तो तुम्हारे में भी प्रवेशता हो जावेगी। फिर झगड़ा हो जावेगा। कितने झगड़े होते रहते हैं। सारी दुनिया में अभी पच्छर माल है ना। पिछाड़ी है। सभी खत्म हो जावेंगे; क्योंकि पतित भ्रष्टाचारी हैं। तो तुम अमरलोक में जाते हो। जीते जी मरने लिए। तुमको कोई डर नहीं है। बाप को याद करते2 ऐसा(ल0ना0) बनना है। लड़ने वाले ऐसे थोड़े ही बनेंगे। वह तो पाई पैसे का पद पा लेंगे; क्योंकि भूत की प्रवेशता है। कोटों में कोऊ भी इसके लिए कहा जाता है। बाकी शास्त्रों में तो हैं दन्त कथाएँ। थ्योरीटिकल। बहुत बातें बनाते हैं। जिसको बाबा धूति भी कहते हैं। पहला नम्बर शास्त्र बनाने वाला नम्बरवन धूता। ऐसी कथाएँ बनाई है जो मनुष्य गिरते ही जाते हैं। ग्लानी की बातें लिख दी है। गीता किसने लिखी? कहेंगे व्यास भगवान ने। अभी उनकी तो आसुरी मत ही होगी ना। तो सभी झूठी बातें लिख दी हैं। रावण ने भी कमाल की है जो एकदम सभी को पत्थर बुद्धि बना दिया है। गीता झूठी महाभारत भी झूठा। युद्ध के बीच में पाठशाला होती है क्या? यह भी चर्याई है ना। सारा मदार है गीता पर। पूछो हिन्दुधर्म किसने स्थापन किया? तो मुँझ पड़ते हैं। कृष्ण ने मानव मत स्थापन की या दैवीमत स्थापन की? मनुष्यों के बिल्कुल ही पत्थरबुद्धि होने के कारण कुछ भी नहीं जानते। बाप को गाली दे खुश होते रहते हैं। ईश्वर कुत्ते–बिल्ले सभी में, हमारे में तुम्हारे में भी है। जिधर देखता हूँ तू ही तू। कुछ भी बुद्धि में आता नहीं। इसको कहा जाता है आसुरी मत। बाबा समझते हैं इनमें क्रोध का भूत है यह क्या पद पावेंगे। फिर ख्याल करते हैं दास–दासियाँ आदि भी तो चाहिए ना। यह राजधानी स्थापन हो रही है। बाप तो श्रेष्ठ बनने लिए श्रेष्ठ मत देते हैं। याद से ही पाप कटते रहेंगे। दैवी गुण भी धारण करनी है। धारण तो यहाँ ही करनी है ना। इसलिए यह संगमयुग मुख्य है। यह पुरुषोत्तम संगमयुग अच्छी रीत याद करना है। पुरुषोत्तम अक्षर न लिखेंगे तो मनुष्य समझेंगे भगवान युगे2 आता है। सीढ़ी उतरनी होती है। जब चढ़ने का समय होता है तब इसको पुरुषोत्तम संगमयुग कहा जाता है। जब कि सर्व का भला होता है। तेरे भाने सर्व का भला..... नानक आया ही अकेला। तो फिर नीच किसको कहेंगे। नानक नीच कहे विचार..... हजारे वार तुम पर बलिहार जावें। तू सदा सलामत..... वह निराकार निरअहंकार है ना। तो नानक भी उनकी महिमा गाते हैं। तो यह सभी बाप बैठ समझाते हैं। साहबज़ादे बनो तो शाहज़ादे बनने का सुख मिले। यह दादा भी कहेंगे पहले हम हरामज़ादे थे फिर साहबजादे, फिर शाहजादे बनेंगे। पतित से पावन साहब बनाते हैं। कितनी खुशी होती है। हरामज़ादा था। अभी साहबज़ादा है। फिर शाहज़ादा बनेंगे। अभी बहुत जन्मों के अन्त में सभी पतित हैं। बाप बच्चों से ही बैठ बात करते हैं। और कोई से नहीं करते। बच्चे ही सुनते हैं। सभी थोड़े ही शाहज़ादे बनने लायक हैं। पिछाड़ी में कर्मातीत अवस्था होनी है। तब बाप कहते हैं अतिइन्द्रिय सुख गोप–गोपियों से पूछो। उस समय वह अडोल अवस्था रहती है। महावीर ने कहा ना मुझे कोई भी हिला नहीं सकते। माया से तुम पिछाड़ी में छूटते हो। माया के साथ बहुत भारी युद्ध चलती है। बहुत लिखते हैं बाबा माया बड़ी तूफान में लाती हैं। स्त्री भी माया का रूप है। बाप को हम याद कर नहीं सकते। स्त्री याद आती रहती। बाबा हम आपको बहुत याद करने का पुरुषार्थ करता हूँ फिर भी बुद्धि चली जाती है। बाप कहते हैं तूफान भल आये। विकर्म न करना है। नहीं तो की कमाई चट हो जावेगी। 5मार से गिर पड़ते हैं। इन पर ही तुम कल्प2 जीत पहनते हो नम्बरवार पुरुषार्थ अनुसार। यह बाप ही जानते हैं। बाबा के पास तो सभी समाचार आते हैं। बापदादा जानते हैं कौन2 क्या करते हैं। गुड़ जाने गुड़ की गोथरी जाने। ब्राह्मणियों की भी रिपोर्ट आती है। लिखते हैं बाबा यह ब्राह्मणी बहुत क्रोध करती है। प्रिन्सपल को तो टीचर की रिपोर्ट देनी होती है ना। कोई2 का स्वभाव ही बहुत गंदा होता है। इनको कहा ही जाता है वैश्यालय। शिवालय की स्थापना शिवबाबा करते हैं। रावण क्या चीज़ है यह कोई भी नहीं जानते। अच्छा मीठे2 रूहानी बच्चों को रूहानी बापदादा का यादप्यार गुडमार्निंग और नमस्ते।